मनसा सेवा - 104

अव्यक्त बापदादा :- (15. 12. 2009)

➳ _ ➳ दु:ख और अशान्ति चारों ओर भिन्न-भिन्न स्वरूप में बढ़ रही है। उसके लिए पवित्रता का वायब्रेशन आवश्यक है। दु:ख अशान्ति का कारण अपवित्रता है। तो अपवित्र आत्माओं को और भक्त आत्माओं को अभी डबल सेवा चाहिए। वाणी की सेवा तो बापदादा ने देखा कि चारों ओर धूमधाम से चल रही है, अपना उल्हना भी निकाल रहे हो। लेकिन **अभी आत्माओं को एकस्ट्रा सकाश चाहिए। वह है मन्सा सेवा द्वारा सकाश देना, हिम्मत देना, उमंग-उत्साह देना। तो इस समय डबल सेवा की आवश्यकता है।**

➳ _ ➳ इसके लिए बापदादा ने कहा कि **हर एक बच्चा अपने को पूर्वज समझो। आप इस कल्प वृक्ष का फाउण्डेशन पूर्वज और पूज्य आप आत्मायें हो।** बापदादा तो दु:खी बच्चों का आवाज सुनते रहते हैं। आप बच्चों के पास उन्हों के पुकार का आवाज पहुंचना चाहिए। **जितना सम्पूर्ण पवित्र आत्मा बनेंगे। बन रहे हैं, बने भी हैं लेकिन साथ-साथ अभी मन्सा सेवा को बढ़ाना है।**

➳ _ ➳ आज विश्व में सुख-शान्ति, सन्तोष आत्माओं में कम हो रहा है। तो आप परमात्म प्यार के पात्र आत्माओं को अभी प्यार की, सन्तुष्टता की, खुशी की अंचली देने की आवश्यकता है। दु:खियों को सुख की अंचली देनी है। एक तो मन्सा सेवा द्वारा सकाश दो और दूसरा अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो।

➳ _ ➳ अभी जो सेवा कर रहे हो और की है बापदादा खुश है कि सेवा में चारों ओर उमंग-उत्साह है लेकिन अभी एक सेवा रही हुई है। अभी तक यह आवाज तो हुआ है कि **ब्रह्माकुमारियां मनुष्य आत्मा को अच्छा बना देती हैं, यह जो अशुद्ध व्यवहार है, अशुद्ध व्यवहार से मुक्त कर देती हैं**, जो गवर्मेन्ट चाहती है यूथ ग्रुप के लिए, वह सेवा बहुत अच्छी करते।

➳ _ ➳ लेकिन अभी बाप आया है, परमात्मा आ गया है, परमात्म ज्ञान यह दे रही हैं, मेरा बाप वर्सा देने आ गया है, अभी बाप की तरफ नज़र जाने से उन्हों को भी परमात्म प्यार, परमात्मा की आकर्षण आकर्षित करेगी। अच्छा-अच्छा तो हो गया है लेकिन परमात्मा बाप की प्रत्यक्षता आकर्षित कर अच्छा बनायेगी। तो अभी बाप के तरफ पहचान, जिसको याद करते हैं वह ज्ञान, वह वर्सा मिल रहा है तो **अभी मन्सा द्वारा बाप के समीप लाओ। अपने चेहरे और चलन द्वारा, आपके नयनों में बाप प्रत्यक्ष हो।** तो अभी यह आपस में प्लैन बनाओ।

➢➢ स्वयं को पूर्वज समझना

➳ _ ➳ पूर्वज अर्थात

→ जो अनुभवी है

→ जो बडे है

→ **पालना करने वाले है**

→ **जिनमे स्प्रीचुअल मैचोरिटी है अध्यात्म मे**

→ जिनमे रहम भाव है

→ **जिनमें वासुदेव कुटुंबकम की भावना है**

→ **जिनमे जगत मात पिता का संस्कार है**

→ जो कमी को पूरा समा ले और आगे बढ़ाए

→ जो सबसे पहले धरती पर आए

→ **जिन्होने सबसे पहले धर्म की स्थापना की**

→ **जिनके द्वारा सृष्टि की स्थापना हुई वो आत्माये पूर्वज है**

→ जो परिस्थितियों मे घबराते नही

→ हलचल मे नही आते भयभीत नही होते

- क्योकि अनुभव होते है उनके पास

→ जो साहस देते है पेशेनस देते है मार्ग बताते है

→ **जो बडे होते है बहुत अनुभवी, परिपक्व, शांत, स्टेबल होते है**

→ जिनके पास धैर्यता होती है संतुष्टता होती है आइडियल होते है

→ **emotional maturity होती है**

→ **सब को एकजुट जोड़कर रखते है**

➢➢ कर्त्तव्य

➳ _ ➳ एक ज्वाइंट फैमिली के कर्तव्य

→ **सब को जोड़कर रखना**

→ संस्कार मिलाकर चलना

→ **सबको समझना और समझाना**

→ सब से पूछ कर निर्णय लेना

→ **सबके प्रति समभाव समदर्शी**

→ दूर दृष्टि और विशाल बुद्धि होती है

→ गल्तियों को समझाना उनको माफ करना

→ **हर जनरेशन के साथ एडजेस्ट करना**

→ **अपने कर्मो से सिखाना**

→ विश्वास पैदा करना

→ जीवन क्या है समझाना

→ **संस्कार निर्माण करना**

➳ _ ➳ हम पूर्वज आत्माओ के कर्तव्य

→ अपनी स्थिति को बनाना

→ **उनके साथ एडजेस्ट होकर चलना**

→ उनके दर्द को समझना

→ उनके दर्द को फील करना

→ **समानुभूति करना**

→ संसार की आत्माओ को क्षमा करना

→ उनको सिखाना समझाना पालना

→ **ला और ला का बैलेंस सिखाना**

→ अपने कुल और मर्यादाओं का ज्ञान देना

→ **डिटैच रहना**

→ जागो और जगाओ

- जागरण अर्थात आत्म अभिमानी
- जितना जागे हुए है सारे चक्र खुले हुए है
- **स्वदर्शन चक्र मे सारे चक्र खुल जाते है**

➢➢ चक्र

➳ _ ➳ सबसे नीचे मूलाधार चक्र

→ बस बुद्धि खाने मे ही लगी रहती है

➳ _ ➳ उससे ऊपर स्वादिष्ठान चक्र

→ किसी के ऊपर डोमीनेट करना

→ **अधिकार, पावर, सता, पोजीशन जीवन यही घूमता रहता है**

➳ _ ➳ उसके ऊपर का मणिपुर चक्र

→ काम वासना का चक्र है उन दो से तो ऊपर है

→ **पर अध्यात्म मे बाधा है**

→ वो नीचे का ही है नीचे के चक्र मे law of gravity है

→ जो नीचे का केवल भोजन दूसरा सता तीसरा या तो खुद सरेंडर होना देह का तल है

→ **ऊपर का जो तल है प्रेम का तल है वो बहुत नाजुक है वो प्रेम कब काम मे परिवर्तित हो जाता है उनको भी पता ही नही चलता**

→ ये बीच का चक्र है इससे सम्भावनायें ऊपर जाने की भी है नीचे जाने की भी अधिकतर नीचे ही चला जाता है

➳ _ ➳ अनाहद चक्र

→ **अनाहद चक्र प्रेम का चक्र है इस के लिए उस प्रेम की दिशा न दी जाए तो वो नीचे ही चला जाता है**

- **ज्ञान तलवार चाहिए वरना नीचे ही सरकता है**

→ संसार इन नीचे के तीन तल पर ही घूम रहा है भोजन सत्ता और काम वही घूमते रहते है गोल गोल

➳ _ ➳ विशुद्धि चक्र

→ विशुद्ध चक्र प्रार्थना का है

→ **बाह्य जगत और आंतरिक जगत को मिलाने वाला है**

→ इस तल पर रहने वाली आत्माये प्रेम से भी ऊपर उठने लगती है

→ अध्यात्म के जगत मे एन्ट्री हो रही है

➳ _ ➳ आज्ञा चक्र

→ **आज्ञा चक्र मे तीसरी आंख यानि यहां ज्ञान की पराकाष्ठा होती है**

→ भोजन सता काम इन सब से ऊपर उठी है

→ चेतना ऊपर ऊपर और ऊपर उठ रही है

→ ह्रदय मे प्रेम भी ऊपर उठ रहा है

→ वासुदेव कुटुम्बकम की भावना है

➳ _ ➳ सबसे ऊंचा सहस्राद चक्र

→ उस तलमे पार्ट और होल एक है

→ **ये सृष्टि जैसे एक नाटक खेल है**

- कुछ भी disturbance नही करता

→ बहुत ऊंचा तल है

→ यहां विकार वासना मृत्यु सब खेल लग रहा है

➳ _ ➳ **<u>इन तलों पर रहना अर्थात पूर्वज स्थिति मे रहना</u>**

➳ _ ➳ सातो चक्रों मे ऊर्जा प्रवाहित होती रहे और नीचे की ऊर्जा ऊपर ऊपर आती जाए नीचे के चक्रों को छोड़ते जाए